ताकि मैं उन लोगों के लिए उदाहरण बनूँ जो बाद में उस पर
विश्वास करेंगे]

प्रभु यीशु की स्तुति हो। आप सभी का स्वागत है – आइए हम परमेश्वर के वचन को ध्यानपूर्वक समझें।

पौलुस उन लोगों के लिए एक अद्वितीय उदाहरण हैं जो आज पाप में जीवन यापन कर रहे हैं। जब हम उनके अतीत को देखते हैं, तो हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। वह स्वयं कहते हैं कि पहले वह एक अपमान करने वाले और हिंसक व्यक्ति थे – एक ऐसा व्यक्ति जिसके जीवन में नैतिक मूल्य नहीं थे। वह यह भी कहते हैं कि वह अहंकारी और कठोर थे।

लेकिन यह सब तो सामान्य पाप ही हैं। सबसे गंभीर यह था कि वह मसीह के शत्रु थे। मसीह-विरोधी की आत्मा उन्हें पहले ही घेरे हुए थी
– विद्रोह की आत्मा, विनाश का पुत्र। और हम जानते हैं कि सभी पापों की चरम सीमा है—मसीह के खिलाफ होना, जैसे शैतान है। यही अवस्था वह पहले में थे।

वह यरूशलेम में पवित्र लोगों के उत्पीड़न के प्रमुख थे। यहां तक कि स्तिफनुस की पत्थर मारकर हत्या में भी उनका हाथ था। वह निर्दयी थे और मसीही कहलाने वालों के प्रति कोई दया नहीं रखते थे। उनके अत्याचार की खबरें इतनी फैल गईं कि लोग उनके आते ही छिप जाते थे।

फिर भी यह उनके लिए पर्याप्त नहीं था। उन्होंने अपने कार्यों

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

[illegible]

[illegible]

---

1 [illegible] 1:12–17 (ERV-HI [illegible])

> *12* “[illegible]
> *13* [illegible]
> *14* [illegible]

ताकि मैं उन लोगों के लिए उदाहरण बनूँ जो बाद में उस पर
विश्वास करेंगे]

15 यह वचन विश्वास योग्य और पूरी तरह स्वीकार्य है कि मसीह यीशु संसार में आए ताकि पापियों को उद्धार दें, जिनमें मैं सबसे बड़ा हूँ।
16 परन्तु इसी कारण मुझे दया मिली, ताकि मसीह यीशु मेरे ऊपर अपने सम्पूर्ण धैर्य का प्रदर्शन करें, और मैं उन लोगों के
लिए उदाहरण बनूँ जो बाद में उस पर विश्वास करके अनन्त जीवन पाएँगे।
17 अब अनन्त राजा, अविनाशी, अदृश्य, एकमात्र परमेश्वर को युगानुयुग आदर और महिमा मिले। आमीन।”

एक ऐसा व्यक्ति जिसने कभी यीशु को अपने समय में नहीं देखा, जो पहले पन्तेकुस्त के दिन उपस्थित नहीं था, जो कभी क्रूस का सबसे बड़ा शत्रु था—आज हम उसकी चिट्ठियाँ पढ़कर सीखते हैं।

1 कुरिन्थियों 15:9–10 (ERV-HI अनुसार)

9 “क्योंकि मैं प्रेरितों में सबसे छोटा हूँ और प्रेरित कहे जाने के योग्य भी नहीं, क्योंकि मैंने परमेश्वर की कलीसिया
का सताया।
10 परन्तु परमेश्वर की कृपा से मैं वही हूँ जो मैं हूँ; और उसकी कृपा मेरे ऊपर व्यर्थ नहीं गई, बल्कि मैंने उनसे भी

ताकि मैं उन लोगों के लिए उदाहरण बनूँ जो बाद में उस पर
विश्वास करेंगे]

अधिक कार्य किया – परन्तु यह मैं नहीं, बल्कि परमेश्वर की
कृपा है जो मेरे साथ है।”

यह दिखाता है कि परमेश्वर यह नहीं देखता कि आपने पहले कितना पाप किया या उसका काम कितना क्षतिग्रस्त किया। वह केवल यह देखता है कि आप आज कितनी गंभीरता से पश्चाताप करते हैं, उसकी ओर लौटते हैं और आज्ञाकारिता करते हैं। यही वह स्थान है जहाँ वह शुरू करता है।

और जैसे-जैसे आप उसके साथ ईमानदारी से चलते हैं, वह आपको दिन-ब-दिन उठाता है, यहाँ तक कि आप उन लोगों से भी आगे बढ़ सकते हैं जो पहले विश्वास में खड़े थे और आज महान परमेश्वर के सेवक माने जाते हैं। यह परमेश्वर का नियम है। वह किसी को विशेष नहीं मानता केवल इसलिए कि उसने यीशु को देखा या उसके साथ चला। यदि ऐसा होता, तो पौलुस के लिए कोई जगह नहीं होती और केवल बारह प्रेरित ही बढ़ते रहते।

जैसे ही आप सच्चे मन से पश्चाताप करते हैं और अपने पुराने जीवन को छोड़कर नया जीवन शुरू करते हैं—उसी क्षण उसकी कृपा आप पर बरसनी शुरू हो जाती है। इसी क्षण से आपका स्तर बढ़ना शुरू हो जाता है।

ताकि मैं उन लोगों के लिए उदाहरण बनूँ जो बाद में उस पर
विश्वास करेंगे]

इसलिए: यीशु पर विश्वास करें। ऐसे जीवन जिएँ जैसे कोई पश्चाताप करने वाला व्यक्ति। उसके लिए उत्साही बनें – और आप स्वयं देखेंगे कि वह आपको कहाँ तक ले जाएगा।

पौलुस हमारे लिए जीवंत उदाहरण हैं: यदि हम विश्वासयोग्य रहें, तो परमेश्वर हमें उनके समान या उनसे भी अधिक बना सकते हैं।

शालोम।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5